

સંક્ષિપ્ત સમાચાર
મનેરગા કે જરિએ રોપે
જાએંગે સાઢે બારાં
કરોડ પૌથૈ

લખનऊ (ભૂરો) : ઉત્તર પ્રદેશ મંદ્રાંત સાથે બારાં કરોડ પૌથૈ અધિક પૌથૈ કા રાણ કિયા જાએંના. ઉલ્લેખનીય હૈ કે ઇસ બાર અભિયાન 'એક પેંડા' આધિત હોએંના. પૂર્ણ પ્રદેશ મંદ્રાંત લોહીપૂર ખીરી કા ઇસ અભિયાન મંદ્રાંત સાથે બાંદી લક્ષ્ય મિલા હૈ. વધું 42 લાખ પૌથૈ કો યોજના બાંદી હૈ. ઇસે બાંદી સાથે મંદ્રાંત કો કિનાના લાભ મિલ રહો હૈ. ઇસે સાથે મંદ્રાંત કો કિનાના લાભ સાકે ઔર સુધીએ કે લાંબા જાએ અને અત્યારે મંદ્રાંત કો પ્રદેશ કા યોજના બાંદી હૈ. ઇસે બાંદી સાથે મંદ્રાંત કો તીસરા સંબંધ બાંદી લક્ષ્ય સાથે પણ ગયા હૈ. ઇન જીલોની કો અપાન્ની પૌથૈ રોપે જાએંના. અધિકત સુધી કો અપાન્ની પૌથૈ રોપે જાએંના.

કશ્મેર કી પર્યાણ
ક્ષમતા સુંદર પરિરદ્દ્યો
તક હી સેપિયન નહીં
શ્રોનારા. કદ્રેય પર્યાણ મંત્રી ગંગંદ્ર સિંહ શોખાવત ને મંગલવાર કો કિયા કરશીર કી પર્યાણ ની સુંદરી હૈ. અનુરૂપ પૌથૈઓ કા રોપણ સુનિર્ભિત કિયા જાએના.

टैरिफ वॉर तेज

सोमवार को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने बांगलादेश, जापान समेत 14 देशों पर टैरिफ बढ़ाने का ऐलान किया है। साथ ही समय सीमा में भी इजाफा किया। जैसाकि हम जानते हैं कि ट्रम्प ने टैरिफ को लेकर नई जुलाई डेलाइन बताई थी, जो अब एक अगस्त तक के लिए बदली दी गई है। इन 14 देशों में भारत शामिल नहीं है। भारत की बातचीत बाबर चल रही है और ऐसी खबरें आ रही हैं कि अमेरिका व भारत ट्रेड डील करने के बेद रिकार्ब पहुंच गए हैं, लेकिन यह भी कहा जा रहा है कि अग्र एक अगस्त में पहले समझौता नहीं हुआ तो भारत पर 26 प्रतिशत टैरिफ लगा हो सकता है।

कंड्रेन वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने भारत का रुख सम्पर्करत हुए कहा है कि भारत राष्ट्रीय हितों को सबसे ऊपर रखेगा। मतलब साफ है कि भारत अपने हितों के अनुसार ही अमेरिका से व्यापारिक डील करेगा। अब तक अमेरिका ने सिर्फ ब्रिटेन और वियतनाम के साथ ही शुरुआती डील की हैं। अमेरिका ने स्वामीराप पर 40 प्रतिशत टैरिफ लगाया है जो एक अगस्त से लागू होगा, जबकि जापान, साउथ कोरिया पर 25 प्रतिशत है। ये अंकों दर्शाते हैं कि ट्रम्प टैरिफ को लेकर बेद गंभीर हैं और किसी भी सामान का जा सकता है। ब्रिटेन से जुड़े देशों का वह चेतावनी दे चुके हैं और कह चुके हैं कि अब ब्रिटेन देशों को अमेरिका के हितों को छोट पहुंचाई, तो वे उन पर अतिरिक्त टैरिफ लगाएंगे। मतलब साफ है कि ट्रम्प सारे हथकंडे अपना रहे हैं। उनका व्यवहार भी स्थिर नहीं है वह कब क्या कर दे कुछ नहीं कहा जा सकता। ट्रम्प ने ब्लॉक हाउस में इजरायल के पीएम बीजिंगन नेतृत्वाधी की मेजबानी करते हुए जो प्रकारों से बात की, वह उनके व्यवहार को बताने के लिए काफी है। उनका कहना था कि अमेरिका ने ब्रिटेन और चीन के साथ समझौते पर पहुंचने के करीब है, लेकिन यह कहते हुए वह दावा करने से नहीं चूके कि उनकी सरकार ने भारत-पाक के बीच बहुव बड़ी लड़ाई रुकवा दी थी। यह दावा पहले ही वह 14 से अधिक बार कर चुके हैं और यह सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। मजे की बात यह है कि वह इस संघर्ष को रुकवाने में जिस धमको का इस्तेमाल कर रह है वह व्यापार की है। उनके अनुसार व्यापार ही वह शक्ति है जिसके बल पर उन्होंने भारत-पाक के बीच संघर्ष रुकवाया था। चीन ने भी ट्रम्प के रवैये की आलोचना की है, जिस तरह वह व्यापार को लेकर देशों से बात कर रहे हैं। चीन उससे नाशुद्ध है चीन का कहना है कि वह किसी भी प्रकार के टैरिफ और ट्रेड वॉर का विरोध करता है। उनके फैसले से दुनिया में उथल पूथल ही अधिक मचती दिखाई दे रही है। सबसे बड़ी दिक्कत तो उनका व्यवहार है, जो किसी के समझ में नहीं आ रहा है। अब देखा है कि एक अगस्त के बाद किस तरह के समझौते सामने आते हैं।

न्यायपालिका ने कार्यपालिका का दखल नहीं होना चाहिए



डा. बी.आर आवेंडकर ने सांविधान सर्वोपरि की बात की थी, उक्ता का मानना था कि न्यायपालिका को कार्यपालिका के हस्तक्षेप से मुक्त होना चाहिए, यानी न्यायपालिका में कार्यपालिका का दखल नहीं होना चाहिए, अवेंडकर ने कहा था कि हम सभी संविधान की सर्वोच्चता में विश्वास करते हैं, जो शार्ट और और जरुरी दबाव डालने के हार रास्ते पर विरोध करते की बात चीन ने कही है। अब देखा है कि डोनाल्ड ट्रम्प अपनी सोच को किस तरह आग बढ़ाते हैं, लेकिन अब तक जो अमेरिकी राष्ट्रपति की जो छाँव बनी है वह कोई विशेष उत्साह नहीं जगाती। उनके फैसले से दुनिया में उथल पूथल ही अधिक मचती दिखाई दे रही है। सबसे बड़ी दिक्कत तो उनका व्यवहार है, जो किसी के समझ में नहीं आ रहा है। अब देखा है कि एक अगस्त के बाद किस तरह के समझौते सामने आते हैं।

-भूषण रामकृष्ण गवई, मुख्य न्यायाधीश

भा

रात्री संस्कृति में गुरु का स्थान सर्वोच्च जननदाता है, वे जीवन के बास्तकार, जीवन-नियमात् एवं स्वस्करणात् हैं। वे शिष्य को केवल अंकरों का ज्ञान नहीं देते, बल्कि आत्मा के स्वरूप से उसका परिचय कराते हैं। इसके बाद उसका जीवन-नियम करते हैं। वे न केवल अंकर के प्रकाश की ओर ले जाते हैं, बल्कि जीवन की दुर्विधाओं और असमंजसों को दूर कर उसे सार्थक दिलाते हैं। ऐसे ही गुरु-तत्व के पूजन का पर्व है-गुरु पूर्णिमा, जो हर वर्ष आधार शुक्रवार की प्रातिष्ठा की द्वारा और समर्पण से मनवा जाता है। हिन्दू धर्म की मान्यता के अनुसार इस दिन महर्षि वेदव्याप का जन्म हुआ था, इसलाई इसे व्याप सूर्णिमा भी कहते हैं। वेदव्याप ने चारों बाँधुओं का संकलन बाया, पुराणों की रचना की और महाभारत जैसा अद्वितीय महाकाव्य रचा।

वे न केवल ज्ञान के स्रोत थे, बल्कि आत्मबोध के महामार्दिशक भी थे। गुरु पूर्णिमा सन्मार्ग एवं सत्त-मार्ग पर ले जाने वाले महापुरुषों के पूजन का पव है, जिह्वाने अपने न्याय, तपस्या, ज्ञान एवं साधाना से न केवल व्यक्ति को बल्कि समाज, देश और दुनिया को भवसागर से पार उतारने की राह प्रदान की है। भारतीय लोक-चेतना में सत्य की आर गति करने एवं जीवन को जीवन्त रूप से बांधने की शृंखला में गुरु पूर्णिमा का सर्वोपरि महत्व माना गया है। यह अन्यथा-जगत विशेषतः सनातन धर्म का महत्वपूर्ण उत्सव है, इसे

क

त्यना कीजिए कि आप किसी जंगल या शहर की सड़क पर चल रहे हैं और आपको दू-दूर तक किसी जीव या इंसान का नामानुशासन तक न दिखे, फिर भी वैज्ञानिकों द्वारा न दिखे, कौन से वायरस मौजूद थे और यह कैसे है? कौन की कल्पना नहीं है, विलिंग है? तो? यह संभव हुआ है पर्यावरणीय डी-एप्लेर (D-Eppler) का विश्लेषण करने के एक नई तकनीक नैमापार सिक्केंसिंग से। शोधकर्ताओं ने इसका इस्तेमाल किसी क्षेत्र में मौजूद जैव-विविधता की तस्वीरें पेश करने में संभव है।

गोरतलब है कि हर सजीव, जाहे वह इंसान हो, जानवर हों या वनस्पतियां, अपने आसपास के वातावरण में त्वचा की झिल्ली, लार, बाल या को। शिकाइयों जैसे बहुत बारीक कण छाँदते रहते हैं, जिनमें उनका डीपीन होता है। इसके अलावा, बाहरी और संकटग्रास प्रजातियों पर नजर रखने, बोमारियों फैलाने वाले वायरस या बैक्टीरियों की पृष्ठ चान करने और बिना संपर्क के इंसानों के मुकाबले जो मुकाबले के अनुसार ही है। यह तकनीक जंगली और शहरों में जैव विविधता की निगरानी करने में काफी उपयोगी है। इसके अलावा, बाहरी और संकटग्रास प्रजातियों पर नजर रखने, बोमारियों फैलाने वाले वायरस या बैक्टीरियों की पृष्ठ चान करने और यह कैसी उपस्थिति है जो वह इं-डी-एप्लेर करते हैं? यह संभव हुआ है पर्यावरणीय डी-एप्लेर (D-Eppler) का विश्लेषण करने के लिए जीवन की कल्पना नहीं है, जिनमें उनका डीपीन होता है। इसके अलावा और संकटग्रास प्रजातियों पर नजर रखने, बोमारियों फैलाने वाले वायरस या बैक्टीरियों की पृष्ठ चान करने और यह कैसी उपस्थिति है जो वह इं-डी-एप्लेर करते हैं?

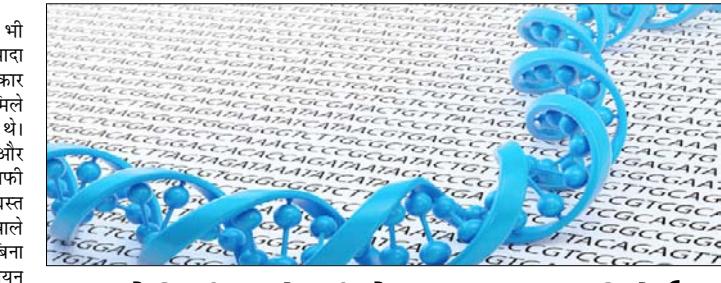
अब, एक नई तकनीक (नैमापार सिक्केंसिंग) विकसित की गई है। इसकी मदद से वैज्ञानिक एक बार में डी-एप्लेर की लंबी श्रृंखला पढ़ सकते हैं। इससे यह पता चलता है कि तरह कर के जीव वहाँ थे, लेकिन यह तरीका जीवन की धीमा, महांग और सीमित जानकारी वाला था। फिर आई शॉटगन सिक्केंसिंग तकनीक। इसमें किसी भी विश्लेषण से इंसानों के अध्ययनों में संरक्षित विश्लेषण से मिल सकती है, लेकिन इसके साथ एक चिन्ह भी है। याद वैज्ञानिकों द्वारा हो सकता है कि इनका इंसानी उपस्थिति घट जाएगी। इसके अलावा और संकटग्रास प्रजातियों पर नजर रखने, बोमारियों फैलाने वाले वायरस या बैक्टीरियों की पृष्ठ चान करने और यह कैसी उपस्थिति है जो वह इं-डी-एप्लेर करते हैं?

अब कोई जीवन की धूम नहीं है, जिसके बाद एक अध्ययन आयरलैंड की

ई डीएनए की मदद से हवा में बिखरे जीवन की पहचान

राजधानी डबलिन की हवा के नमूने लेकर भी किया गया। यहाँ वैज्ञानिकों को इंसानों की ज्यादा विविध जेनेटिक जानकारी मिली उड़ 221। प्रकार के इंसानी वायरस और बैक्टीरियों के डी-एप्लेर मिले जो फिरोडिया के मुकाबले 7 गुणवत्ता अधिक है। वैज्ञानिकों के अनुसार, हवा तकनीक जंगली और शहरों में जैव विविधता की निगरानी करने में काफी उपयोगी है। इसके अलावा, बाहरी और संकटग्रास प्रजातियों पर नजर रखने, बोमारियों फैलाने वाले वायरस या बैक्टीरियों की पृष्ठ चान करने और बिना संपर्क के इंसानों के अध्ययनों में संरक्षित विश्लेषण करने हैं। यह कैसी उपस्थिति है जो वह इं-डी-एप्लेर करते हैं?

इसी तरह का एक अध्ययन आयरलैंड की



अमेरिकी बच्चों की सेहत पर 'महा' रिपोर्ट

में अमेरिका हैल्टी अगेंसी (महा - MAHA) आयोग ने हाल ही में अमेरिकी बच्चों की सेहत को लेकर एक रिपोर्ट में अमेरिकी बच्चों में तेजी से बढ़ते जीवनी रोगों पर चिंता व्यक्त की है। आयोग ने कहा है कि अमेरिका में बच्चों की सेहत पर सर्वाधिक असर अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खानापान, हवा, पानी व बोर्ज के संरक्षित पर नजर रखने, बोमारियों फैलाने वाले वायरस या बैक्टीरियों की पृष्ठ चान करने और यह कैसी उपस्थिति है जो वह इं-डी-एप्लेर करते हैं? यह कैसी उपस्थिति है जो वह इं-डी-एप्लेर करते हैं?

अब कोई जीवन की धूम नहीं है, जिसके बाद एक अध्ययन आयरलैंड की

